ISSN: 2583-5149 | Vol. 2, Issue. 2 |December 2022 | Frequency: Biannual

अभिनवधारा
ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
www.ijiis-org.com

कालिदास का काव्य सौन्दर्य

INDU CHARAN
RESEARCH SCHOLAR IF AMITY UNIVERSITY
DEPARTMENT-- SANSKRIT

Received: 23 December 2022 | Accepted: 25 December 2022 | Published: 31 December

कालिदास संस्कृत भाषा के सबसे महान कवि और नाटककार थे। कालिदास ने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनायें की। कालिदास अपनी अलंकार युक्त सुंदर सरल और मधुर भाषा के लिये विशेष रूप से जाने जाते हैं ।

कालिदास जी ने संस्कृत जगत में कई उपाधियों को प्राप्त किया है, उन्हें कवि कुलगुरु कालिदास, कविता कामिनीविलास आदि नामों से जाना जाता है । शब्दों के मिथ्या आडम्बर में ना जाकर उन्होंने प्रसाद गुण से पूर्ण ललित पदावली का निवेश किया जो

चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः

(सूखी लकड़ी को शीघ्र पकड़ने वाली अग्नि के समान जो गुण चित्त को सहसा व्याप्त कर ले वहीं प्रसाद है) के नियम से अकस्मात् हृदय को आवर्जित कर लेती है। उनकी कविता शैली में समासों का अल्पत्व, पदों की समुचित स्थान पर निवेश, अनुप्रास न रहने पर भी अनुपम नाट्य सौंदर्य व भावों का सहसा स्फुरण- ये विशिष्ट गुण तो आपततः से ही प्रकट होते हैं ।इन गुणों के लिये उदाहरण ढूँढने की आवश्यकता नहीं किसी भी पद को लिया जा सकती है।

एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं, नवं वयः कांतमिदं वपुश्च।
अल्पश्च हेतोर्बहु हातुमिच्छन्, विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्।

इस उदाहरण में राजा दिलिप को एक साधारण गाय के प्राण त्याग न करने का परामर्श देते हैं । प्रसंग समझने। पर भाव का सौन्दर्य अपनी प्रतिभा के अनुसार सरलता से ग्रहण किया जा सकता है शब्द की सजावट और छंद का माध्यम पाठक को इन्हें हाने के लिये विवश कर देंगे ।

कालिदास की रचनाओं में स्वाभाविक रुप से जो शब्दालंकार आ जाते हैं ,वही पाये जाते हैं । यमक या अनुप्रास भरने का पृथक प्रयास कवि ने कहीं नहीं किया है। जैसे -

अथ प्रजानामधिपः प्रभाते , जायाप्रति ग्रहित- गंधमाल्याम।

वनाय पीतप्रतिबद्धवत्सां, यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच॥

इसमे पकार का प्राचुर्य रखकर भी " पत्नि प्रतिग्राहित " नहीं कहा पुनः "धनो धेनु" में भी अनुप्रास है।

इसी प्रकार भाषा के सौन्दर्य का निदर्शन रघुवंशम के नवम सर्ग में स्वाभाविक रुप से पाया जाता है। व्यंजना द्वारा भावों की अभिव्यक्ति में कालिदास अतुलनीय है ध्वनिकार ने कुमारसंभव को इस दृष्टि से बहुत महत्व दिया है कि पार्वती की शालीनता संकोच व शिव के विवाह किये जाने से मौन स्वीकृति को भी अत्यधिक कुशलता से कवि द्वारा समझाया गया है ।

अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग भी कालिदास ने बडी ही सरलता से किया है, उपमान और उपमेय के अवैध दर्शन के रुप में रुपक अलंकार का कालिदास ने कुमार संभव के उस पद में मनोरम निवेश किया है लता रुपी बंधुओं से वृक्ष रुपी परसों नें कोमल कोमल शाखा रुपी भुजाओं के आलिंगन की प्राप्ति कर की है। उपमा अंलक् प्रयोग में कालिदास की विशिष्टता के कारण लोकोक्ति चल पडी है

"उपमा कालिदासस्य"

इन शास्त्रीय उपमा से कहीं बढ़कर कालिदास ने लौकिक उपमायें दी हैं ।जो पाठक की ह्रदय आवर्जित कर लेती हैं । कालिदास के यदि छंद की बात की जाये तो उन्हे सबसे ज़्यादा प्रिय उपजाति छंद है जो उन्होंने रघुवंशम के नवम सर्ग में तथा कुमारसंभव के प्रथम, तृतीय और सप्तम सर्ग में मुख्य छंद के रुप में प्रस्तुत किया है।

कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी प्रतिभा सर्वांगीण है। महाकाव्य , नाटक और गीत के सभी क्षेत्रों में उनकी रचनाएँ अद्वितीय हैं। तत्कालीन समाज की वास्तविक रूप और सांस्कृतिक चेतना की झांकी उनके कार्यों में पाई जाती है। कालीदास को दुनिया के महान काव्य साहित्कारों में गिना जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि:

Banerjee, Suresh Chandra. Kālidāsa – koṣa. Varanasi 1968.

Bharat, Nāṭyaśāstra. Ed. Suresh Chandra Bandopadhyaya. Calcutta 1997 (vol-i).

Bhargava, Dayanand. Jaina Tarkabhāṣā. Delhi 1973.

Bhattacharya, Srimohon / Bhattacharya, D.C. Bharitiya Darsan kosa (vols 1-3). Calcutta 1978- 1981.